Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

हिन्दी सिनेमा में बाल-मनोविज्ञान
(‘तारें ज़मीन पर’ एवं ‘हिचकी’ फिल्म के विशेष संदर्भ में)

विशाल साहु
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
रेवेंशॉ विश्वविद्यालय, कटक
Email:- vsahoo73@gmail.com
https://doi.org/10.5281/zenodo.19426252

मानव विकास के प्रत्येक पहलू का अध्ययन करने के लिए मनुष्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन एक नितांत आवश्यकीय प्रकार्य है। मनोविज्ञान की एक बेहद ज़रूरी तथा संवेदनशील शाखा है ‘बाल-मनोविज्ञान’। मनोविज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत बाल-उम्र अर्थात बाल्यावस्था के दौर में एक शिशु के मानसिक विकास व द्वन्द्व आदि का अध्ययन किया जाता है। इस आधुनिक एवं प्रतिस्पर्धा के युग के मध्य बाल-उम्र में शिशुओं के मनस्तत्व का अध्ययन एक प्रासंगिक मुद्दा है। इस बाल-मनोविज्ञान का अर्थ स्पष्ट करते हुए डॉ. सेलिया ए. डेकर कहते हैं, “The scientific study of children from conception to adolescence is called child psychology or child development. Child development is concerned with changes the occur in children. It includes the way children’s bodies grow and develop. Child development is concerned with the way children think and learn, the way they feel about themselves, and the way they interact with others.”[1] (गर्भधारण से किशोरावस्था तक बच्चों के वैज्ञानिक अध्ययन को बाल-मनोविज्ञान या बाल-विकास कहा जाता है। बाल-विकास का संबंध बच्चों में होने वाले परिवर्तनों से है। इसमें बच्चों के शरीर के बढ़ने और विकसित होने के तरीके शामिल हैं। बाल-विकास का संबंध इस बात से है कि बच्चे किस तरह सोचते हैं और सीखते हैं, वे अपने बारे में कैसा महसूस करते हैं और कैसे वे दूसरों के साथ इन्टरेक्ट करते हैं।) यह बाल-उम्र एक ऐसा समय है, जहाँ बच्चे कच्ची मिट्टी के बराबर होते हैं। इस उम्र में उन्हें जो आकार दिया जाएगा वे ताउम्र उस आकार में नज़र आएँगे। इसलिए बालों की मनःस्थिति का विज्ञान सम्मत अध्ययन आगामी पीढ़ि की नींव को सुदृढ़ बनाने के लिए बहुत ज़रूरी है। इस अध्ययन के बलबूते बच्चों की उलझन और उसकी मनोदशा को समझते हुए उसका हल निकाला जाता है। इसलिए डॉ. सुरेन्द्र नाथ तिवारी कहते हैं, “बच्चों की भावनाओं, जिज्ञासाओं, कल्पनाओं आदि को ध्यान में रखते हुए उनकी समस्याओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से हल करने का प्रयास किया जा रहा है। और बाल मनोविज्ञान की सहायता से बच्चों की उलझन समझी जा सकती है।”[2]

बाल-उम्र में बच्चों के मनस्तत्व को अच्छी तरह समझने के लिए शिक्षकों के महत्त्व को नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। शिक्षक एक बच्चे को ज़िंदगी की असली राह से रूबरू करवाता है। इक्कसवीं शताब्दी में आज जहाँ अभिभावक पैदाइश के बाद बच्चे को रोबोर्ट की तरह पढ़ाई करवा कर सर्वदा अव्वल देखना चाहते हैं, वहाँ बच्चे की मनोदशा को समझते हुए उसकी रुचि के अनुसार उसको ज़िंदगी के लक्ष्य के तरफ़ प्रेरित करवाने तथा उसकी मानसिक क्षमता को पहचानते हुए पढ़ाई को यथासंभव दिलचस्प बनाने के लिए एक योग्य व कुशल शिक्षक की अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता। हिन्दी में ऐसी बहुत सी फिल्में बनी हैं, जहाँ एक बच्चे के जीवन में शिक्षक की भूमिका को अच्छी तरह प्रदर्शित किया गया है। शिक्षक एक बच्चे की मनःस्थिति को समझते हुए उसे उचित शिक्षा प्रदान करने का काम करते हैं । इन फिल्मों में से ‘तारें ज़मीन पर (एवरी चाइल्ड इज स्पेशल)’ (2007) एवं ‘हिचकी’ (2018) फिल्म का स्थान अनन्य है।

‘आमिर खान’ द्वारा निर्देशित ‘तारें ज़मीन पर (एवरी चाइल्ड इज स्पेशल)’ एवं ‘सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा’ द्वारा निर्देशित ‘हिचकी’ फिल्म में प्रासंगिक तौर पर स्कूली बच्चों की मानसिक दशा तथा बाल-मनोविज्ञान को समझने वाले सुशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। ‘तारें ज़मीन पर’ फिल्म में मुख्य किरदार के रूप में ‘दर्शील सफारी’ नज़र आते हैं, जो ‘ईशान अवस्थी’ की भूमिका अदा करते हैं। ‘ईशान अवस्थी’ डिसलेक्सिया नामक मानसिक बीमारी से जूझता हुआ एक आठ साल का स्कूली छात्र है। डिसलेक्सिया के कारण उसे पढ़ाई में बहुत दिक्कतें आती हैं। उसकी मानसिक स्थिति को न परखते हुए उसके अभिभावक अच्छी पढ़ाई करने के लिए उसे बोर्डिंग स्कूल में डाल देते हैं। बाल-उम्र में परिवार से बिछड़ने के कारण वह एकदम से चुप्पी साध लेता है। अपने पसंदीदा विषय चित्रकला से भी वह मुहँ मोड़ लेता है। फिर वहाँ बतौर एक अस्थायी चित्रकला शिक्षक के रूप में आए हुए ‘राम शंकर निकुंभ’ (आमिर खान) डिसलेक्सिया से प्रपीड़ित ‘ईशान अवस्थी’ की मनःस्थिति का सटीक मूल्यांकन करते हुए उसे न केवल पढ़ाई में पक्का करवाते हैं, बल्कि चित्रकला में उसकी खोई हुई रुचि को पुनः लौटा पाते हैं। इसी प्रकार अभिनेत्री ‘रानी मुखर्जी’ ‘हिचकी’ फिल्म में ‘नैना माथुर’ नामक एक ऐसी शिक्षिका के रूप में उभरती हैं, जो स्कूल में सभी शिक्षकों से प्रताड़ित, राइट टू एजुकेशन (RTE) के तहत दाखिला लेने वाले तथा सबसे दुत्कारे जाने वाले विद्यार्थियों की कक्षा (9F) की मनःस्थिति को समझ कर न सिर्फ पढ़ाई करवाती हैं, अपितु उस कक्षा की दो छात्राओं को प्रिफ़ेक्ट बैच (मेधावी छात्रों को दिया जाने वाला सम्मान) की अधिकारिणी बनाती हैं। उपर्युक्त दो अलग-अलग परिस्थितियों में स्वतः नज़र आता है कि बाल-उम्र में बाल-मनःस्थिति को समझने वाले शिक्षकों की इस समाज में कड़ी आवश्यकता है, अन्यथा बच्चों का भविष्य

अनायास अंधकारमय होने के साथ-साथ अगली पीढ़ि पर संकट की अमानवीय छाया मंडराने लगेगी।

'तारें ज़मीन पर' के 'ईशान अवस्थी' का डिसलेक्सिया का शिकार होने के कारण उसे अक्षरों को समझने-पढ़ने-लिखने, समयानुसार वस्तु की गति निर्धारण करने, अपने रोज़मर्रा के काम करने तथा अन्य बच्चों की तरह पढ़ाई करने में तकलीफ़ होती थी। इसलिए आए दिन स्कूल से उसके नाम पर दर्जनों शिकायतों के गुच्छे घर आते थे। न सिर्फ घर से बल्कि अपनी सोसाइटी से भी उसके नाम की फ़रियादें लगती थीं। यहाँ सबसे बड़ी बात यह थी कि उसके माता-पिता कभी उसे समझ नहीं पाए। सारा का सारा दोष 'ईशान' के मत्थे मढ़ दिया जाता था, एवं उसे दंडित किया जाता था। पढ़ाई के मामले में हमेशा उसके माता-पिता तथा स्कूली शिक्षक उसकी तुलना उसके बड़े भाई 'योहान अवस्थी' से करते थे, जो हर विषय तथा खेलकूद में आगे रहता था। भारतीय अभिभावकों की यह एक सबसे बड़ी गलती है कि वे सदैव अपने बच्चों की तुलना किसी दूसरे बच्चे से करने लगते हैं। प्रत्येक बच्चे की अलग प्रतिभा तथा अलग दृष्टिकोण होता है। ऐसे में किसी दूसरे से उसकी तुलना कर अपने बच्चे का मनोबल तोड़ना बिल्कुल तार्किक नहीं है। 'ईशान' के माता-पिता कभी उसकी असुविधा को समझने की कोशिश नहीं करते थे। उन्हें सिर्फ और सिर्फ परीक्षा में अच्छे अंकों से मतलब होता था। प्रासंगिक माहौल पर नज़र डालते हुए यह कहा जा सकता है कि इस आधुनिक प्रतिस्पर्धा के दौर में अभिभावक अपने घर में टॉपर्स उगाने की दौड़ में लगे पड़े हैं, एवं अपनी अहं की तुष्टि हेतु बच्चों से उनका बचपन छीन कर उनका रोबोटिकरण करने से पीछे नहीं हटते। ऐसे में एक बच्चे की मनःस्थिति प्रति पल घायल होती हुई नज़र आती है। इस अवस्था में एक शिशु के लिए उसके अभिभावकों के साथ की बहुत आवश्यकता होती है। विडंबना का विषय तो यह है कि माता-पिता अपने जन्मित शिशु की मनोभावना तथा मानसिक दशा को समझने में असफल हो रहे हैं। 'ईशान' प्रत्येक दिन उसके शिक्षकों से 'ईडियट', 'डफ़र', 'नालायक' एवं 'मूर्ख शिरोमणि' आदि शब्दों से दुत्कारा जाता था। कोई भी 'ईशान' में किसी भी प्रकार की संभावना का पुट ढूँढना ही नहीं चाहते थे। इस तरह एक बच्चा मन ही मन सोच लेता है कि वह वास्तव में अपनी ज़िंदगी में कुछ हासिल नहीं कर सकता। दंड के स्वरूप बोर्डिंग स्कूल भेज दिए जाने पर 'ईशान' बिल्कुल अकेला हो जाता है। अकेलेपन तथा परिवार के प्रति क्षोभ के कारण अपने पसंदीदे चित्रकला विषय से भी वह अपना नाता तोड़ देता है। धीरे-धीरे उसे किसी भी चीज़ का फ़र्क पड़ना बंद होने लगता है। वह सर्वदा अपने आपको एक अंधेरे में पाता है। उसकी इस मार्मिक दशा को फिल्म में आए हुए एक संगीत के माध्यम से परखा जा सकता है, जिसमें उसका शिशु मन अपनी माँ के पास अपने अकेलेपन की दस्तावेज़ को उद्घाटित करता हुआ नज़र आता है, "मैं कभी बतलाता नहीं, पर अंधेरे से डरता हूँ मैं माँ। यूँ तो मैं दिखलाता नहीं, तेरी परवाह करता हूँ मैं माँ। तुझे सब है पता है न माँ, तुझे सब है पता .... मेरी माँ।"[3] संगीत की उपर्युक्त पंक्ति से यह स्वतः समझा जा सकता है कि एक बच्चे के लिए उसकी माँ की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है। परंतु जब एक माँ ही अपने बच्चे की मनोदशा को नहीं समझती तब बच्चा धीरे-धीरे 'ईशान अवस्थी' की तरह अकेलेपन से जूझने लगता है। कक्षा में दंडित होना, कक्षा के बाहर खड़े रहना एवं पूरी कक्षा के समक्ष शिक्षकों से डांट सुनना 'ईशान' के लिए रोज़मर्रा की बात बन गई थी। वह इन सारी चीज़ों का आदी बन चुका था।

'हिचकी' फिल्म में 'सैन्ट नोड़कर्स' नामक विद्यालय में आर. टी. ई. के तहत दाखिला लेने वाली 9(F) की कक्षा को कोई पढ़ाना नहीं चाहता। फिल्म देख कर दर्शक को यह लगने लगता है कि जैसे यह कक्षा सम्पूर्ण विद्यालय के लिए महज़ एक बोझ है। विद्यालय में 9(F) के बच्चों को सभी शिक्षकों तथा अन्य मेधावी विद्यार्थियों से इतनी घृणा का सामना करना पड़ता है कि वे सब विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं छात्रों से नफ़रत करने लगते हैं। विद्यालय का एक शिक्षक 'मिस्टर वाडिया' 9(F) के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करते हुए कहते हैं कि, "They don't belong here. They never did, they never will."[4] विद्यालय में सभी बच्चों का स्थान एक समान होता है। ऐसे में शिक्षक का यह कर्तव्य होता है कि उत्तम शिक्षण प्रणालियों का इस्तेमाल कर बच्चों को पढ़ाई की तरफ़ आकर्षित करना। परंतु जब कोई शिक्षक किसी बच्चे की मनोदशा को न समझते हुए सारा दोष बच्चे पर आरोपित करते हैं, तब कहीं न कहीं यह विद्यार्थियों की नहीं, शिक्षक की असफलता है। शिक्षक अगर सिर्फ मेधावी विद्यार्थियों को पढ़ाना चाहे एवं पढ़ाई में कमज़ोर विद्यार्थियों को नज़रंदाज़ करें, तो वहाँ शिक्षक की भूमिका पर प्रश्न उठना लाज़मी है। कमज़ोर विद्यार्थियों की तरफ़ शिक्षक को विशेष रुचि दिखाने की सख्त आवश्यकता होती है। अन्यथा शिक्षकों की उपेक्षा के चलते अक्सर बच्चे शिक्षक को अपना जानी दुश्मन मान लेते हैं, जैसे फिल्म में 9(F) की कक्षा ने सम्पूर्ण विद्यालय के शिक्षकों को अपना शत्रु मान लिया था।

एक विद्यार्थी के जीवन में एक शिक्षक का स्थान बहुत ज़रूरी होता है। एक अच्छा शिक्षक सदैव अपने छात्रों की मनःस्थिति को समझते हुए सटीक शिक्षण प्रविधि का इस्तेमाल कर न सिर्फ विद्यार्थी को पढ़ाई के लिए प्रेरित करते हैं, अपितु उन्हें ज़िंदगी के सही लक्ष्य पथ पर चलना भी सिखाते हैं। शिक्षकता की इस पहचान को आलोचित दो फिल्मों में 'राम शंकर निकुंभ' एवं 'नैना माथुर' रूपयान्वित करते हुए सामने आते हैं।

'ईशान' की ज़िंदगी में 'राम शंकर निकुंभ' के आगमन के पश्चात उसकी ज़िंदगी की दिशा में नया मोड़ आने लगता है। 'निकुंभ सर' धीरे-धीरे 'ईशान' की पढ़ाई के पैटर्न को समझते हुए यह जान पाते हैं कि वह डिसलेक्सिया का मरीज़ है। जब 'ईशान' की अवस्था के बारे में वह उसके अभिभावकों के साथ साझा करते हैं, तब उनका व्यवहार बहुत कठोर हो जाता है। परंतु 'निकुंभ सर' उन्हें यह समझा कर आते हैं कि बच्चों को इस तरह सख्त हो कर पाला नहीं करते। सभी बच्चों की अलग-अलग रुचि होती है। अभिभावकों का अपने बच्चों को न समझ पाना बच्चों को मानसिक स्तर पर विकलांग बना देता है। 'निकुंभ सर' कहते हैं, "ज़रा सोचिए, एक बच्चा, महज आठ या नौ साल का, पढ़ नहीं पाता, लिख नहीं पाता, रोज़मर्रा के मामूली काम नहीं कर पाता। वह सारी चीजें नहीं कर पाता जो उसके उम्र के बच्चे बड़ी आसानी से कर लेते हैं। क्या बितती होगी उस पर ? उसकी सेल्फ कान्फिडन्स की तो धज्जियाँ उड़ जाती होंगी। अपनी खामियों को टेढ़ेपन की लिवाज़ में लपेट कर दुनिया से लड़ता होगा हर रोज।"[5] 'निकुंभ सर' की इस उक्ति से यह पता चलता है कि वह 'ईशान' की मनोदशा को बहुत अच्छी तरह समझ लेते हैं। जो काम 'ईशान' के माता-पिता नहीं कर पाए, वहाँ वह काम एक शिक्षक कर पाता है। फिर धीरे-धीरे 'निकुंभ सर' उचित शिक्षण प्रविधि का व्यवहार कर 'ईशान' को पढ़ाई के प्रति आकर्षित कर, पढ़ाई में मजबूत बनाते हैं। चित्रकला के प्रति 'ईशान' की खोई हुई रुचि को 'निकुंभ सर' उसके भीतर पुनः प्रतिस्थापित

करते हैं। 'हिचकी' फिल्म में भी तमाम असुविधाओं का सामना करती हुई 'नैना माथुर' उपयुक्त शिक्षण कला का इस्तेमाल कर सम्पूर्ण 9(F) को पढ़ने में मजबूत बनाती हैं। यहाँ 'राम शंकर निकुंभ' एवं 'नैना माथुर' यह प्रमाणित करते हैं कि बच्चों को सिखाने के पर्याय उचित होने से कठिन से कठिन विषय के प्रति भी विद्यार्थियों के रूझान को बढ़ाया जा सकता है। इन दोनों किरदारों से यह पता चलता है प्रत्येक बच्चा अपने विषय में पारंगत होता है, उसे बस उचित माध्यमों से सिखाने की कमी रहती है। सिखाने की इसी कमी के कारण जब बच्चों पर दोष लाद दिया जाता है, तब बच्चों की मानसिक स्थिति बिगड़ कर धराशायी हो जाती है। वे अपने लिए एक अलग तथा कंटकित दुनिया का निर्माण कर लेते हैं।

माता-पिता अक्सर अपने सपनों का भार अपनी औलादों के नाजुक कंधों पर जबरन लाद देते हैं। परंतु वे भूल जाते हैं, ज़िंदगी में स्वप्न साकार करने की पूर्ण स्वाधीनता बच्चे की होती है। अभिभावक के तौर पर सिर्फ बच्चों का मार्गदर्शन तथा सहायता की जा सकती है, मात्र मार्गदर्शन के नाम पर जब अपना लक्ष्य बच्चों पर जबरदस्ती लाद दिया जाता है तब बच्चे का जीना दूभर हो जाता है। किसी दूसरे के स्वप्न के सहारे जीने से बच्चे अपने लक्ष्य का आविष्कार तक नहीं कर पाते। इस संदर्भ में फिल्म में 'राम शंकर निकुंभ' कहते हैं, "अरे ज़रा सोचो ! हर बच्चे की अपनी खूबी होती है। अपनी काबिलियत होती है। अपनी चाहत होती है। लेकिन नहीं ! हर उंगली को खींच कर लंबी करने में लगे हैं सब। लगे रहो ! चाहे वह उंगली क्यों न टूट जाए।"[6] बच्चों के निजी स्वप्न को छीन कर अपने स्वप्नों का भार उन पर डालना वास्तव में किसी बाल-श्रम (Child Labour) से कम नहीं। 'हिचकी' फिल्म में जब 9(F) के बच्चों को 'मिस्टर वाडिया' विद्यार्थी बनने के योग्य नहीं मानते हैं तब 'नैना माथुर' कहती हैं, "There are no bad students, only bad teachers."[7] यहाँ 'नैना माथुर' की इस उक्ति से यह प्रमाणित होता है कि बच्चे सीखने में असमर्थ नहीं होते, शिक्षक बच्चों को सिखाने में असमर्थ होते हैं। जब शिक्षक अपनी असमर्थता का भार विद्यार्थियों पर डाल देते हैं, तब विद्यार्थी की मनःस्थिति डगमगा जाती है, क्योंकि बच्चा अपनी गलती को ढूँढता हुआ थक जाता है।

बच्चों को जब उनकी मानसिक स्थिति का परीक्षण कर उन्हें विषयों के ज्ञान समेत, ज़िंदगी के लक्ष्य से परिचित करवा दिया जाता है, तब वे मानसिक विकार से निकल कर अच्छी तरह जीवन व्यतीत करने लगते हैं। दोनों ही फिल्मों की परिसमाप्ति में बच्चे स्वाधीन नज़र आते हैं। जहाँ 'तारें ज़मीन पर' फिल्म में 'ईशान' पढ़ाई-लिखाई में अच्छा होने के साथ-साथ उत्तम चित्रांकन करता है, वहाँ 'हिचकी' फिल्म में 9(F) की कक्षा, जो परीक्षा में बैठने लायक नहीं थी, उस कक्षा के समस्त विद्यार्थी न सिर्फ परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं, अपितु उनमें से दो छात्राएँ प्रिफ़ेक्ट बैच के लिए योग्य विवेचित होती हैं। दोनों फिल्मों के अंत में सफ़लता के बाद बच्चों की आँखों में उभरी खुशी के आँसू इस बात का द्योतक हैं कि आखिरकार उनकी मनोदशा को किसी ने सही तरह से समझा एवं उन पर विश्वास किया।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बाल-मनस्तत्व को समझने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक हमेशा विद्यार्थी के लिए होते हैं। एक अच्छे शिक्षक मिल जाने पर विद्यार्थी केवल अच्छा पढ़ता ही नहीं है, अपितु उसे अपनी ज़िंदगी की दिशा मिल जाती है। अभिभावकों को कभी अपने स्वप्नों की पूर्ति अथवा अहं की तुष्टि हेतु अपने बच्चों को माध्यम बनाना नहीं चाहिए। बच्चों को अपना जीवन जीने का पूर्ण हक होता है। प्रतियोगिता में आगे भागने के लिए अपने बच्चों को हथियार बनाना कतई ग्रहणीय विषय नहीं है। परिस्थिति आने पर अभिभावकों का कठोर होना आवश्यक है, परंतु उस कठोरता की भी एक सीमा होना आवश्यक है। अन्यथा बच्चा अपने अभिभावकों को अपना शत्रु मान लेता है और अपने से जुड़ी कोई बात उनसे साझा नहीं करता। फलतः कई बार वह खुद अपने लिए गलत निर्णय ले लेता है। बाल-मनोविज्ञान पर आधारित आलोचित उपर्युक्त दो फिल्में वास्तव में बाल मनोदशा को समझाने में बहुत कारगार साबित होती हैं।

संदर्भ :-

1. डेकर, डॉ. सेलिया ए., चिल्ड्रन : द यर्ली ईयर्स, गुडहार्ट-विलाक्स पब, साउथ हॉलण्ड, 1998, पृ. सं. 19-20
2. तिवारी, डॉ. सुरेन्द्र नाथ, हिन्दी बाल साहित्य : परंपरा, विकास एवं मूल्यांकन, कोशल पब्लिकैशन, अयोध्या (उ. प्र.), 2012, पृ. सं. 39
3. फिल्मी संगीत, तारें ज़मीन पर (एवरी चाइल्ड इज स्पेशल) (फिल्म), विमोचन वर्ष 2007
4. फिल्म में 'मिस्टर वाडिया' का संवाद, हिचकी (फिल्म), विमोचन वर्ष 2018
5. फिल्म में 'राम शंकर निकुंभ' का संवाद, तारें ज़मीन पर (एवरी चाइल्ड इज स्पेशल) (फिल्म), विमोचन वर्ष 2007
6. वही
7. फिल्म में 'नैना माथुर' का संवाद, हिचकी (फिल्म), विमोचन वर्ष 2018